चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	13-2-24		

THE TIMES OF INDIA

INDIA'S LARGEST ENGLISH NEWSPAPER

Hisar varsity signs MoU with IFFDC

Hisar: Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (CCSHAU), Hisar, has signed a memorandum of understanding with the Indian Farm Forestry Development Cooperative Limited (IFFDC), Delhi, to popularise its bottle gourd hybrid HBGH-35 developed by the department of vegetable science among Haryana farmers.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	13-2-24	4	1-4

विकसित घीया की किस्म ज्यादा किसानों तक पहुंचाने का प्रयास

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय विकसित घीया की संकर किस्म एचबीजीएच हाईब्रिड-35 किस्म ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत है। इससे किसान न केवल अच्छी पैदावार पा सकते हैं अपितु अच्छी आमदनी प्राप्त कर आर्थिक स्थिति को सदृढ़ भी कर सकते हैं। इसी कड़ी में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और इंडियन फार्म फारेस्ट्री डेवलेपमेंट को-आपरेटिव लिमिटेड (आइएफएफडीसी) के बीच एमओयू हुआ है।

- विश्वविद्यालय और इंडियन फार्म फारेस्ट्री डेवलेपमेंट को-आपरेटिव लिमिटेड (आईएफएफडीसी) के बीच हुआ एमओयू

एमओयू पर हस्ताक्षर के दौरान मौजूद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर. काम्बोज, कंपनी और विश्वविद्यालय के अधिकारी। • विज्ञप्ति

घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 की विशेषताएं

सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. एसके तेहलान ने बताया कि विकसित घीया की औसतन पैदावार बारिश एवं गर्मी के मौसम में 300-310 क्विंटल प्रति हैक्टेयर आंकी गई है। उपरोक्त किस्म की घीया लंबाई में मध्यम, फलों का छिलका पतला एवं मुलायम होता है। साथ ही इसके फल हल्के हरे रंग में बेलनाकार आकार के होते हैं और इन्हें पकाने में भी कम समय लगता है।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा और इंडियन फार्म फारेस्ट्री डेवलेपमेंट को-आपरेटिव लिमिटेड दिल्ली के एमडी एसपी सिंह ने इस एमओयू पर हस्ताक्षर किए हैं। इस दौरान इंडियन फार्म फारेस्ट्री डेवलेपमेंट को-आपरेटिव लिमिटेड हिसार के डीजीएम मांगेराम भी मौजूद रहे। एमडी एसपी सिंह ने कहा कि हकृवि किसानों से सीधे तौर से जुड़कर उनके उत्थान में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की ओर से ओएसडी डा. अतुल ढींगड़ा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. मंजू महता, मीडिया एडवाइजर डा. संदीप आर्य, एसवीसी कपिल अरोड़ा, डा. धर्मबीर दूहन, आइपीआर सेल के प्रभारी डा. विनोद सांगवान आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	13.2.24	9	4-8

घीया की एचबीजीएच हाइब्रिड-35 किस्म ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने का प्रयास

एचएयू व आईएफएफडीसी के बीच हुआ एमओयू

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित घीया की संकर किस्म एचबीजीएच हाइब्रिड-35 किस्म ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने का लगातार प्रयास है। विश्वविद्यालय का प्रयास है कि किसान न केवल इस किस्म की अच्छी पैदावार पा सकते हैं अपितु अच्छी आमदनी प्राप्त कर अपनी आर्थिक स्थिति को सदृढ़ भी कर सकते हैं।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड (आईएफएफडीसी), हिसार के बीच सोमवार को एमओयू हुआ है। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा और इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, दिल्ली के एमडी एसपी सिंह ने इस एमओयू पर हस्ताक्षर किए है। इस दौरान इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, हिसार के डीजीएम मांगेराम भी मौजूद रहे।

इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, दिल्ली के एमडी एसपी सिंह ने कहा कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय किसानों से सीधे तौर से जुडकर उनके उत्थान में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। विवि द्वारा विकसित घीया की एचबीजीएच हाइब्रिड-35 के बीजों को खेत में बोने के बाद इसके फल पहली तुड़ाई के लिए लगभग 55 दिन बाद मंडी में आ जाती है। खास बात यह है कि इस किस्म के फलों का आकार बेलनाकर होने के कारण इसको काफी पसंद किया जाता है।

हिसार। एमओयू पर हस्ताक्षर के दौरान मौजूद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज, कंपनी और विश्वविद्यालय के अधिकारी। फोटो: हरिभूमि

बारिश के दिनों में लगाना संभव

सब्जी विज्ञान विभाग की वैज्ञानिक टीम द्वारा विकसित घीया की एचबीजीएच हाइब्रिड-35 को गर्मी व बारिश के दिनों में उगाया जा सकता है। घीया की एचबीजीएच हाइब्रिड-35 पर बीते तीन वर्षों तक परीक्षण किए गए, जिनमें बारिश के मौसम में इस किस्म की अधिकतम पैदावार 355 क्विंटल प्रति हैक्टेयर और गर्मी के मौसम में इसकी पैदावार 260 क्विंटल प्रति हैक्टेयर दर्ज की गई। इन्हीं मौसम में इस किस्म के साथ उगाए गए चेक संकर किस्मों से इस किस्म की पैदावार लगभग 25 प्रतिशत अधिक आंकी गई।

ये रहे उपस्थित

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की ओर से ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू महता, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, एसवीसी कपिल अरोड़ा, डॉ. धर्मबीर दूहन, आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. विनोद सांगवान सहित कंपनी के अन्य अधिकारीगण भी मौजूद रहे।

घीया की एचबीजीएच हाइब्रिड-35 की ये है विशेषताएं

सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एसके तेहलान ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 की औसतन पैदावार बारिश एवं गर्मी के मौसम में 300-310 क्विंटल प्रति हैक्टेयर आंकी गई है। उपरोक्त किस्म की घीया लंबाई में मध्यम, फलों का छिलका पतला एवं मुलायम होता है। साथ ही इसके फल हल्के हरे रंग में बेलनाकार आकार के होते हैं और इन्हें पकाने में भी कम समय लगता है। इसलिए किसान इस किस्म को उगाना अधिक पसंद करते हैं। घीया की एचबीजीएच हाइब्रिड-35 बरसात एवं गर्मी की फसल दोनों में प्रमुख बीमारियों जैसे कि पत्ती का धब्बा रोग एवं एन्थक्रोज नामक बीमारी का प्रकोप भी कम मात्रा में होता है। इस संकर किस्म में कीटों का प्रारंभिक अवस्था में लालड़ी नामक कीट का कम आक्रमण होता है, जिसको कीट विभाग विभाग द्वारा अनुमोदित रसायनों से आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	13.2.24	7	3-5

घीया के हाइब्रिड बीज के लिए हकृवि और आईएफएफडीसी में हुआ एमओयू

हिसार, 12 फरवरी (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित घीया की संकर किस्म एचबीजीएच हाईब्रिड-35 किस्म ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत है, जिससे कि किसान न केवल इस किस्म की अच्छी पैदावार पा सकते हैं अपितु अच्छी आमदनी प्राप्त कर अपनी आर्थिक स्थिति को सदृढ़ भी कर सकते हैं। इसी कड़ी में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड (आईएफएफडीसी), हिसार के बीच एमओयू हुआ है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के.पाहुजा और इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, दिल्ली के एमडी एस.पी सिंह ने इस एमओयू पर हस्ताक्षर किए हैं। इस दौरान इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डवेलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, हिसार के डीजीएम मांगेराम भी मौजूद रहे।

हिसार में सोमवार को एमओयू पर हस्ताक्षर के दौरान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज, कंपनी और विश्वविद्यालय के अधिकारी। -हप्र

इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, दिल्ली के एमडी एस.पी सिंह ने कहा कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय किसानों से सीधे तौर से जुड़कर उनके उत्थान में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 के बीजों को खेत में बोने के बाद इसके फल पहली तुड़ाई के लिए लगभग 55 दिन बाद मंडी में आ जाती है।

हाईब्रिड-35 की विशेषता

-सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के.तेहलान ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 की औसतन पैदावार बारिश एवं गर्मी के मौसम में 300-310 क्विंटल प्रति हैक्टेयर आंकी गई है। उपरोक्त किस्म की घीया लंबाई में मध्यम, फलों का छिलका पतला एवं मुलायम होता है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की ओर से ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू महता, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, एसवीसी कपिल अरोड़ा, डॉ. धर्मबीर दूहन, आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. विनोद सांगवान सहित कंपनी के अन्य अधिकारीगण भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	13.2.24	4	1-4

एचएयू में विकसित घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 किस्म के लिए हुआ एमओयू

किस्म की औसत पैदावार 300-310 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है

एचएयू में एमओयू पर हस्ताक्षर के दौरान मौजूद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज, कंपनी और विश्वविद्यालय के अधिकारी। स्रोत आयोजक

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से विकसित घीया की संकर किस्म एचबीजीएच हाईब्रिड-35 किस्म को लेकर एचएयू ने इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड (आईएफएफडीसी) हिसार के साथ एमओयू किया है। कुलपति प्रो. बीआर कांबोज की उपस्थिति में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड के एमडी एसपी सिंह ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए हैं। इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड के डीजीएम मांगेराम भी मौजूद रहे।

सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एसके तेहलान ने बताया कि एचबीजीएच हाईब्रिड-35 की औसतन पैदावार बारिश एवं गर्मी के मौसम में 300-310 क्विंटल प्रति हेक्टेयर आंकी गई है। उपरोक्त किस्म की घीया लंबाई में मध्यम, फलों का छिलका पतला एवं मुलायम होता है। इसके फल हल्के हरे रंग में बेलनाकार आकार के होते हैं और इन्हें पकाने में भी कम समय लगता है। इसमें बरसात एवं गर्मी की फसल दोनों में प्रमुख बीमारियों जैसे कि पत्ती का धब्बा रोग एवं एन्थ्रक्रोज नामक बीमारी का प्रकोप भी कम मात्रा में होता है।

प्रारंभिक अवस्था में लालड़ी नामक कीट का कम आक्रमण होता है। बारिश के मौसम में अधिकतम पैदावार 355 क्विंटल ,गर्मी के मौसम में पैदावार 260 क्विंटल प्रति हेक्टेयर दर्ज की गई। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू महता, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, एसवीसी कपिल अरोड़ा, डॉ. धर्मबीर दूहन, आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. विनोद सांगवान मौजूद रहे।

कैंपस कॉलिंग

एनईपी 2020 के तहत नियमों में बदलाव : अब 12वीं कक्षा तक पढ़ाने के लिए टीईटी जरूरी

नई दिल्ली। अब 12वीं कक्षा तक पढ़ाने के लिए शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) जरूरी होगी। अभी तक राज्यों और केंद्र सरकार के स्कूलों में पहली से आठवीं कक्षा तक का शिक्षक बनने के लिए टीईटी जरूरी होता था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के तहत टीईटी को नौवीं से 12वीं कक्षा तक लागू किया जाएगा। खास बात यह है कि सीटेट (केंद्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा) की तर्ज पर टीईटी को भी उम्र भर के लिए मान्य करने की योजना है। इसका अर्थ है कि यदि कोई उम्मीदवार एक बार टीईटी पास कर लेता है तो वह उम्र भर मान्य रहेगा।

एनसीटीए के वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, केंद्र सरकार के स्कूलों के लिए सीटेट और राज्यों के स्कूलों के लिए राज्य शिक्षक पात्रता परीक्षा (एसटीईटी) आवश्यक अर्हता होती है। सामान्य रूप से इसे ही टीईटी बोला जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत स्कूली शिक्षा संरचना को चार चरणों यानी फाउंडेशनल, प्रिपरेटरी, मिडिल और सेकेंडरी (5+3+3+4) में विभाजित किया गया है। इसी के तहत शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के मकसद से शिक्षक पात्रता परीक्षा का विस्तार किया जा रहा है। ब्यूरो

तीन राज्यों में बदला नियम

हरियाणा, केरल, ओडिशा व तीन अन्य राज्यों ने टीईटी नियमों में बदलाव कर दिया है। इन राज्यों में एसटीईटी यानी प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा 12वीं कक्षा तक के लिए लागू कर दी गई है। हालांकि, देश के अन्य राज्यों में अभी भी टीईटी परीक्षा का पेपर एक पहली कक्षा से पांचवीं कक्षा तक और दूसरा पेपर छठी कक्षा से आठवीं कक्षा तक के लिए होता है। 12वीं कक्षा तक टीईटी का नियम सभी राज्यों में लागू किया जाएगा। एनसीटीई मुख्यालय में सदस्य सचिव केसांग वाई शेरपा ने कहा कि एनसीटीई माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 से कक्षा 12 तक) पर टीईटी को कार्यान्वित करने की दिशा में काम कर रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	13-2-24	5	5-6

हकृवि द्वारा विकसित घीया की एचबीजीएच हाइब्रिड-35 किस्म ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने का प्रयास : काम्बोज

विश्वविद्यालय व इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलपमैंट को-ऑप्रेटिव लिमिटेड के बीच हुआ एमओयू

हिसार, 12 फरवरी (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित घीया की संकर किस्म एचबीजीएच हाईब्रिड-35 किस्म ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत है, जिससे कि किसान न केवल इस किस्म की अच्छी पैदावार पा सकते हैं अपितु अच्छी आमदनी प्राप्त कर अपनी आर्थिक स्थिति को सदृढ़ भी कर सकते हैं। इसी कड़ी में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलपमैंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड (आईएफएफडीसी), हिसार के बीच एमओयू हुआ है।

प्रो. बी.आर. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के.पाहुजा और इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, दिल्ली के एमडी एस.पी सिंह ने इस एमओयू पर हस्ताक्षर किए है। इस दौरान इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, हिसार के डीजीएम मांगेराम भी मौजूद रहे। इस अवसर पर इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री

एमओयू पर हस्ताक्षर के दौरान उपस्थित विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज, कम्पनी व विश्वविद्यालय के अधिकारी।

डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, दिल्ली के एमडी एस.पी सिंह ने कहा कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय किसानों से सीधे तौर से जुड्कर उनके उत्थान में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 के बीजों को खेत में बोने के बाद इसके फल पहली तुड़ाई के लिए लगभग 55 दिन बाद मंडी में आ जाती है। खास बात यह है कि इस किस्म के फलों का आकार बेलनाकर होने के कारण इसको काफी पसंद किया जाता है। सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के.तेहलान ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 की औसतन पैदावार बारिश एवं गर्मी के मौसम में 300-310 क्विंटल प्रति हैक्टेयर आंकी गई है। उपरोक्त किस्म की घीया लंबाई में मध्यम, फलों का छिलका पतला एवं मुलायम होता है। साथ ही इसके फल हल्के हरे रंग में बेलनाकार आकार के होते हैं और इन्हें पकाने में भी कम समय लगता है। इसलिए किसान इस किस्म को उगाना अधिक पसंद करते हैं। घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 बरसात एवं गर्मी की फसल दोनों में प्रमुख बीमारियों जैसे कि पत्ती का धब्बा रोग एवं एन्थ्रक्रोज नामक बीमारी का प्रकोप भी कम मात्रा में होता है। इस संकर किस्म में कीटों का प्रारंभिक अवस्था में लालड़ी नामक कीट का कम आक्रमण होता है, जिसको कीट विभाग विभाग द्वारा अनुमोदित रसायनों से आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है। सब्जी विज्ञान विभाग की वैज्ञानिक टीम द्वारा विकसित घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 को गर्मी व बारिश के दिनों में उगाया जा सकता है।

घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 पर बीते तीन वर्षों तक परीक्षण किए गए, जिनमें बारिश के मौसम में इस किस्म की अधिकतम पैदावार 355 क्विंटल प्रति हैक्टेयर और गर्मी के मौसम में इसकी पैदावार 260 क्विंटल प्रति हैक्टेयर दर्ज की गई। इन्हीं मौसम में इस किस्म के साथ उगाए गए चेक संकर किस्मों से इस किस्म की पैदावार लगभग 25 प्रतिशत अधिक आंकी गई।ये रहे मौजूदइस अवसर पर विश्वविद्यालय की ओर से ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू महता, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, एसवीसी कपिल अरोड़ा, डॉ. धर्मबीर दूहन, आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. विनोद सांगवान सहित कंपनी के अन्य अधिकारीगण भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	13-2-24	3	7-8

घीया की हाईब्रिड किस्म को लेकर हुआ कंपनी से समझौता

हिसार, 12 फरवरी (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित घीया की संकर किस्म एच.बी.जी.एच. हाईब्रिड-35 किस्म ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत है, जिससे कि किसान न केवल इस किस्म की अच्छी पैदावार पा सकते हैं अपितु अच्छी आमदनी प्राप्त कर अपनी आर्थिक स्थिति को सदृढ़ भी कर सकते हैं। इसी कड़ी में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डिवैल्पमैंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड के बीच एम.ओयू. हुआ है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	12.02.2024	--	--

एचएयू और इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड के बीच हुआ एमओयू

एमओयू पर हस्ताक्षर के दौरान मौजूद प्रो. बी.आर. काम्बोज, कंपनी और विश्वविद्यालय के अधिकारी।

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित घीया की संकर किस्म एचबीजीएच हाईब्रिड-35 किस्म ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत है, जिससे कि किसान न केवल इस किस्म की अच्छी पैदावार पा सकते हैं अपितु अच्छी आमदनी प्राप्त कर अपनी आर्थिक स्थिति को सदृढ़ भी कर सकते हैं। इसी कड़ी में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, हिसार के बीच एमओयू हुआ है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के.पाहुजा और इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, दिल्ली के एमडी एस.पी सिंह ने इस एमओयू पर हस्ताक्षर किए है। इस दौरान इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, हिसार के डीजीएम मांगेराम भी मौजूद रहे। इस अवसर पर इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, दिल्ली के एमडी एस.पी सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय किसानों से सीधे तौर से जुड़कर उनके उत्थान में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 के बीजों को खेत में बोने के बाद इसके फल पहली तुड़ाई के लिए लगभग 55 दिन बाद मंडी में आ जाती है। खास बात यह है कि इस किस्म के फलों का आकार बेलनाकर होने के कारण इसको काफी पसंद किया जाता है। इस अवसर पर डॉ. अतुल ढींगड़ा, डॉ. मंजू महता, डॉ. संदीप आर्य, कपिल अरोड़ा, डॉ. धर्मबीर दूहन, डॉ. विनोद सांगवान सहित कंपनी के अन्य अधिकारीगण भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे	12.02.2024	--	--

हकृवि द्वारा विकसित घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 किस्म ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने का प्रयास : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार, 12 फरवरी। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित घीया की संकर किस्म एचबीजीएच हाईब्रिड-35 किस्म ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत है, जिससे कि किसान न केवल इस किस्म की अच्छी पैदावार पा सकते हैं अपितु अच्छी आमदनी प्राप्त कर अपनी आर्थिक स्थिति को सदृढ़ भी कर सकते हैं। इसी कड़ी में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड (आईएफएफडीसी), हिसार के बीच एमओयू हुआ है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के.पाहुजा और इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, दिल्ली के एमडी एस.पी सिंह ने इस एमओयू पर हस्ताक्षर किए हैं। इस दौरान इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, हिसार के डीजीएम मांगेराम भी मौजूद रहे। इस अवसर पर इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, दिल्ली के एमडी एस.पी सिंह ने कहा कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय किसानों से सीधे तौर से जुड़कर उनके उत्थान में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 के बीजों को खेत में बोने के बाद इसके फल पहली तुड़ाई के लिए लगभग 55 दिन बाद मंडी में आ जाती है। खास बात यह है कि इस किस्म के फलों का आकार बेलनाकार होने के कारण इसको काफी पसंद किया जाता है।

घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 की ये है विशेषताएं

सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के.तेहलान ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 की औसतन पैदावार बारिश एवं गर्मी के मौसम में 300-310 क्विंटल प्रति हैक्टेयर आंकी गई है। उपरोक्त किस्म की घीया लंबाई में मध्यम, फलों का छिलका पतला एवं मुलायम होता है। साथ ही इसके फल हल्के हरे रंग में बेलनाकार आकार के होते हैं और इन्हें पकाने में भी कम समय लगता है। इसलिए किसान इस किस्म को उगाना अधिक पसंद करते हैं। घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 बरसात एवं गर्मी की फसल दोनों में प्रमुख बीमारियां जैसे कि पत्ती का धब्बा रोग एवं एन्थ्रक्नोज नामक बीमारी का प्रको भी कम मात्रा में होता है। इस संकर किस्म में कीट का प्रारंभिक अवस्था में लालड़ी नामक कीट क कम आक्रमण होता है, जिसको कीट विभाग विभा द्वारा अनुमोदित रसायनों से आसानी से नियंत्रि किया जा सकता है। सब्जी विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक टीम द्वारा विकसित घीया की एचबीजीए हाईब्रिड-35 को गर्मी व बारिश के दिनों में उगाय जा सकता है। घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-3 पर बीते तीन वर्षों तक परीक्षण किए गए, जिन बारिश के मौसम में इस किस्म की अधिकत पैदावार 355 क्विंटल प्रति हैक्टेयर और गर्मी के मौसम में इसकी पैदावार 260 क्विंटल प्रति हैक्टेय दर्ज की गई। इन्हीं मौसम में इस किस्म के सा उगाए गए चेक संकर किस्मों से इस किस्म की पैदावार लगभग 25 प्रतिशत अधिक आंकी गई।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की ओर से ओएसई डॉ. अतुल ढींगड़ा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेश डॉ. मंजू महता, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य एसवीसी कपिल अरोड़ा, डॉ. धर्मबीर दूहन आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. विनोद सांगवा सहित कंपनी के अन्य अधिकारीगण भी मौजूद रहे